UGC Sl. No. 48625 Impact Factor : 2.41

ISSN : 2760-X790

शोध भारती

त्रैमासिक पत्रिका

(An International Refereed Research Journal)

Vol. VII, Part-II, Issue. 2, February 2018- April 2018

सम्पादक
हरीश कुमार
आशुतोष त्रिपाठी

सम्पादकीय पता
खोजवाँ बाजार, वाराणसी

समिति
हेल्पिंग हैण्ड यूथ, उत्तर प्रदेश

- **Role of Rural Infrastructure and Agriculture Growth in Bihar** 236–243
  Dr. Ramprawesh Kumar Nirala
- **भारत में ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था : एक समीक्षा** 244–251
  अमरजीत सिंह
- **ग़ज़ल का स्वरूप** 252–262
  डॉ0 लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता
- **बच्चन : निश्च्छल प्रेम की अभिव्यक्ति** 263–269
  डॉ0 नम्रता गुप्ता
- **साहित्य का प्रगतिशील रूप : परम्परा का मूल्यांकन** 270–282
  शत्रुघ्न कुमार मिश्र
- **आधुनिक 'हिन्दी साहित्य' पर पाश्चात्य ज्ञान–विज्ञान का प्रभाव** 283–287
  चन्दन लाल सोनकर
- **फर्रूखाबाद घराने की बंदिशों (गतों) का स्वरूप एवं महत्व** 288–291
  आशीष कुमार मिश्रा
- **भारतीय नैतिकमूल्यों का आधार वेद** 292–297
  डॉ. अजय कुमार मिश्र
- **आदिवासियों का मिथकीय विवेचन** 298–294
  डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी

✷

आदिवासियों का मिथकीय विवेचन

डॉ. सूर्यकांत त्रिपाठी*

मिथक आदिम मानव की प्रकृति और उसके उपादानों के साहचर्य से उत्पन्न प्रतिक्रियाओं का बिम्बात्मक रूपायन (Form) है। इसमें उसकी श्रद्धा, प्रेम, भय, कौतुहल प्रभृति भावनाएँ कथा रूप में अभिव्यक्त होती है। यही कारण है कि लोकमन की समष्टिगत उदात्त रागात्मक संवेदनाओं और चेष्टाओं का प्रतिफलन है। मिथक को बुलफिंच (Bulfinch) का आदिम मानव की भावनाओं का देवी–देवताओं के रूप में विवरण स्वीकारते हुए मत है कि तत्वतः मिथ आदिम मानव का दृश्यमान जगत के संबध से उत्पन्न रागात्मक प्रतिक्रियाओं की बिम्बात्मक रंगीन व्यंजना के लिए अपनाया गया व्याख्यात्मक प्रयास है। इसमें व्यक्ति के गुणों की अपेक्षा सामूहिक अंतश्चेतना व्यंजित है। जब व्यक्ति का चिंतन और समाज का जीवन दोनों का किसी ऐतिहासिक धरातल पर तादात्म्य होता है तब मिथ का जन्म होता है। बुलफिंच (Bulfinch) के मूल कथन को निम्नवत् देखा जा सकता है– "An account of the deeds of a god or divine being usually expressed in terms of primitive thought. In essence it is an attempt to explain be relation of man to the physical world, and has, for those who recount it, a predominantly religious value; or it may pretend to explain the existence of some social organization, or a custom or peculiarities of an environment."[1] बुलफिंच ने देवी–देवताओं के कार्यों और धार्मिक मूल्यों (Religious value) का उल्लेख व्यक्ति की धार्मिक दृष्टि के लिए किया है। धार्मिक दृष्टि का अनुभव केन्द्रबिंदु पर समग्र होना मिथ का हेतु है। यही कारण है कि मिथ का धर्म, यज्ञ तथा आराधना से गहरा संबंध है। मिथ में जो कथा द्वारा व्यक्त है वही रिचुअल्स (Rituals) में क्रियाओं द्वारा किया गया है।

मिथ का जन्म आदिम समाज में है। यह आदिम भाषा तथा साहित्य है। इसका रचयिता अज्ञात है। इसके रचयिता के बारे में कोई जानकारी नहीं है क्योंकि यह समूह मानस के साक्षात्कृत व्यक्त सत्य का कथा बिम्ब है। प्रकृति के मंगलमय, मनोज्ञ ललित रूप उसे आनंदित करते है। इसलिए वह श्रद्धा, प्रेम, आह्लादवश उनको देवी–देवताओं के रूप में पूजता है तथा उसकी कल्पना में अमंगल, भयावह विद्रुप, प्राकृतिक शक्तियाँ दानवाकार बनती है। इससे देव–दानव के शाश्वत संघर्ष का मिथ उमड़ता है। व्यक्ति मानस का सामूहिक अचेतन है। इसे ही आद्य–कथा बिम्बों से प्रकट करता है।

---

* एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर (असम)।

ISSN 2231-3885

114

संवेद

मार्च 2018, मूल्य : ₹ 150

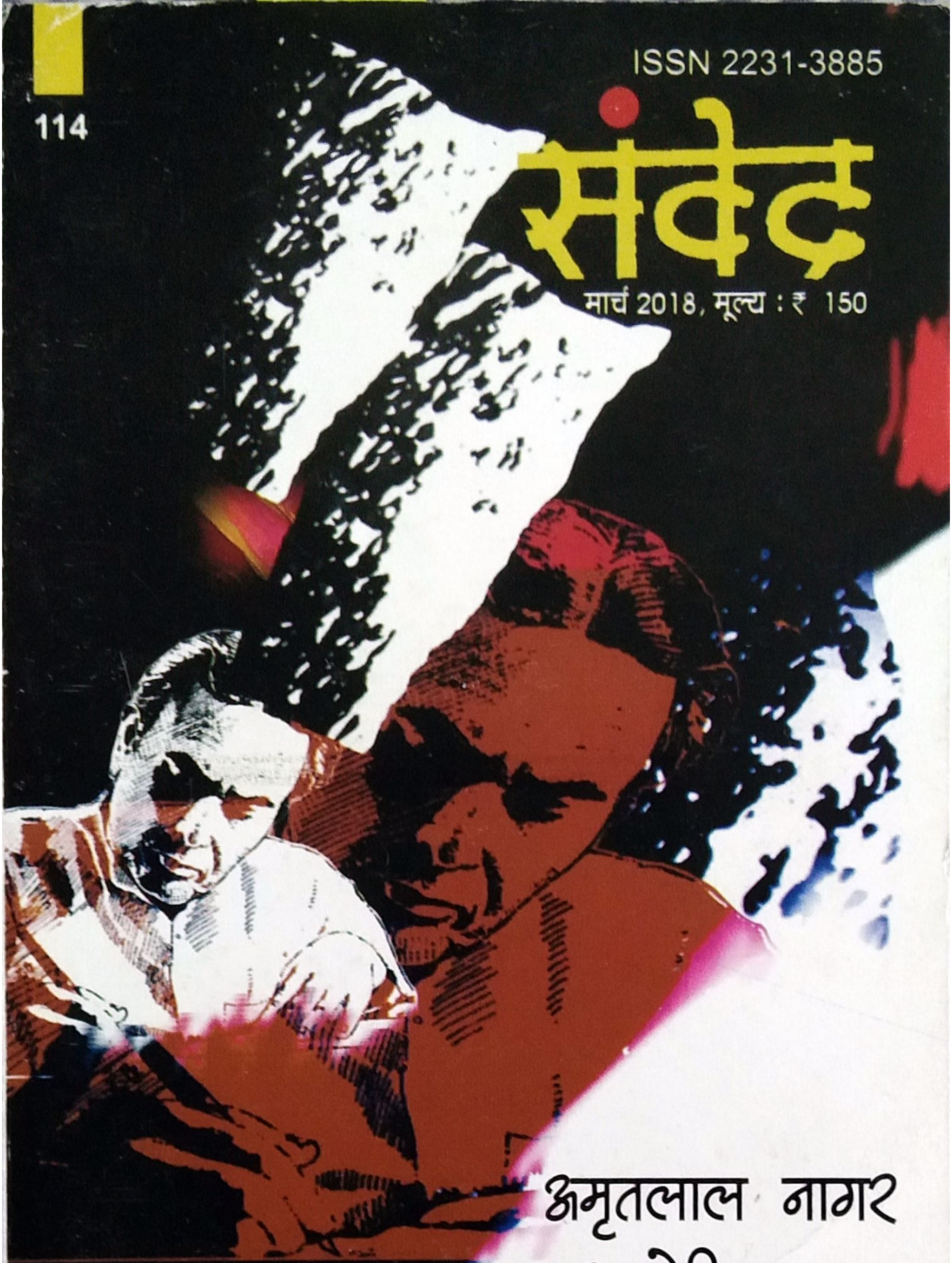

अमृतलाल नागर पर केन्द्रित

ISSN-2231-3885 SAMVED

संवेद-114

वर्ष 10, अंक 3, मार्च, 2018

चित्र : मनोज कुलकर्णी

सम्पादक : **किशन कालजयी**
सहायक सम्पादक : **राहुल सिंह**
अतिथि सम्पादक : **बिपिन तिवारी**
प्रबन्ध सम्पादक : **अतुल माहेश्वरी**

सम्पादकीय सम्पर्क
बी-3/44, सेक्टर-16,
रोहिणी, दिल्ली-110089
मो. : +918340436365
samvedmonthly@gmail.com

आवरण : **प्रिडा क्रिएशन्स**
रेखांकन : **लाल रत्नाकर, श्रद्धा**

एकमात्र वितरक
नयी किताब प्रकाशन
1/11829, प्रथम मंजिल, पंचशील गार्डन,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : 011-22825606, 9811388579
nayeekitab@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक कुमकुम कुमारी द्वारा
बी-3/44, सेक्टर-16, रोहिणी, दिल्ली-110089
से प्रकाशित और लक्ष्मी प्रिंटर्स, 556, जीटी रोड,
शाहदरा, दिल्ली-110032 से मुद्रित।

इस अंक का मूल्य : एक सौ पचास रुपये
वार्षिक सदस्यता : सात सौ रुपये
रजिस्टर्ड डाक से-एक हजार रुपये
आजीवन : दस हजार रुपये

सम्पादन : अवैतनिक

लेखकों के व्यक्त विचारों से सम्पादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचाराधीन।

संवेद-114

इस बार

सम्पादकीय

मानवता ही धर्म है... / 7

यादें

काशीनाथ सिंह : महीन किस्म के लखनउवा आदमी / 19

गिरिराज किशोर : छोटों को ज्ञान, बड़ों को सम्मान, साहित्य में निर्माण / 22

चंचल बीएचयू : पहले बताइए, हम कहाँ खड़े हैं / 27

नवनीत मिश्र : याद करोगे तो याद किये जाओगे / 28

शकील सिद्दीकी : बेमिसाल थे नागरजी / 32

शारिब रुदौलवी : प्रेमचन्द के जानशीन / 35

नूर जहीर : स्याही के रंग / 36

राकेश तिवारी : याकै रहे नागरजी / 44

दीक्षा नागर : मेरे बचपन की कुछ झलकियाँ / 78

पत्र

अशोक त्रिपाठी : पाती लिखी केदार को / 85

बातचीत

नागरजी ने इतिहासकार का भी काम किया : **विश्वनाथ त्रिपाठी** / 90

कम्युनिस्ट नहीं बल्कि विचारों से प्रगतिशील थे : **अब्दुल बिस्मिल्लाह** / 102

संस्मरण

किरन सिंह : तीन चौथाई अमृतलाल नागर / 118

पल्लव : किस्सागो के संस्मरण / 124

कपिल कुमार : यादों के आईने में / 130

उपन्यास कला

अजय तिवारी : सामाजिक जीवन के सामासिक चित्र / 135

महेश कटारे : आम पाठक का खास लेखक / 142

अवधेश प्रधान : तुलसीदास : खोज और पुनःसृष्टि / 146

सूर्यकांत त्रिपाठी : 'नाच्यौ बहुत गोपाल' का यौनिक यथार्थ / 155

अमरेन्द्र नाथ त्रिपाठी : ग्रन्थ-द्वय की समान्तरता में गंगा-जमनी तहजीब / 161

शुभनीत कौशिक : 1857 का विद्रोह, 'गदर के फूल' और अमृतलाल नागर / 167

सूरज कुमार : 'बूंद और समुद्र' : एक चारित्रिक मूल्यांकन / 177

संजीव 'मजदूर' झा : हजारों की मौत के जाम का दस्तावेज / 186

सूर्यकांत त्रिपाठी

'नाच्यौ बहुत गोपाल' का यौनिक यथार्थ

यथार्थ के धरातल पर निर्मित 'नाच्यौ बहुत गोपाल' अमृतलाल नागर कृत उपन्यास दलित और नारी जीवन की यथार्थ स्थिति का नितान्त सजीव दृश्य-दर्शन कराता है। उपन्यास में आद्यंत कथा-प्रवाह जिस अप्रतिहत गति के साथ निसर्ग स्वाभाविकता को लिए हुए प्रवाहित है, नारी मनोविज्ञान की मर्मस्पर्शिता के साथ दलित समाज की चरम चमत्कृति भी वैसी ही सर्वत्र प्राप्त होती है। दीनता, लोलुपता, निरक्षरता, कामान्धता और पारिवारिक कलुषांधकार में कुंठित सामाजिक संस्कृति का युगांतर प्रतिनिधि इतने सहज एवं सरल रूप में 'नाच्यौ बहुत गोपाल' को प्राप्त हो गया है कि कोई भी मर्म परिचय पाकर विस्मय विमुग्ध हुए बिना नहीं रह सकता है।

वस्तुतः यथार्थ का सम्बन्ध अथवा यथार्थ का स्रोत भौतिकवादी-दर्शन से है और भौतिकवादी दर्शन जुड़ता है किसान से, मजदूर से, दलित से तथा नारी से। जहाँ कुछ भी अज्ञेय नही है, सब कुछ को जाना जा सकता है। यथार्थ का विषय-क्षेत्र ज्ञाता के मन उसकी अनिच्छा से परे और उसके बाहर का जो संसार है, वहीं तक सीमित है। जिसे बाहरी संसार अथवा पदार्थ जगत कहा जाता है, जो हमसे बाहर है, यथार्थ अपने को वहीं तक समोए हुए है। जो कुछ ज्ञात है या ज्ञात होने के दायरे में है वही संसार है, वही पदार्थ-जगत है। जो अज्ञेय है इस पदार्थ-जगत का हिस्सा नहीं है उसे जानने की रंच भी स्पृहा यथार्थ की नहीं है। यह पदार्थ-जगत अथवा बाहरी संसार, हमारी इच्छा, अनिच्छा से परे, हमसे बाहर, अपने अधिकार से अस्तित्वान है तथा यथार्थ से या यथार्थ में रुचि रखनेवालों का सरोकार इसी से है।

यथार्थ के सन्दर्भ में मुंशी प्रेमचन्द उपन्यास में पात्रों के चरित्र-निर्माण के पहलू पर बात करते हुए लिखते हैं-''यथार्थवादी चरित्र को पाठक के सामने उनके यथार्थ नग्न रूप में रख देता है। उसे इससे कुछ मतलब नहीं कि सच्चरित्रता का परिणाम बुरा होता है या कुच्चरित्रता का अच्छा। उसके चरित्र अपनी कमजोरियाँ या खूबियाँ दिखाते हुए अपनी जीवन-लीला समाप्त